श्री राम

8 मई 2003

प्रातः 6 से 6.30 बजे ध्यान श्री महाराज ने कहा,

" दूसरों की भूलों को भूल जाओ और अपनी भूलों को भी परमात्मा से क्षमा मांगने के पश्चात भूल जाओ। यदि आप ऐसा नहीं करते तो उसका अर्थ है कि आपको परमात्मा पर विश्वास नहीं है।"

सायं 7.30 बजे से 8.45 तक अमृतवाणी व प्रवचन

श्री महाराज जी के प्रवचन से साधक–जन बहुत प्रभावित हुई, उन का कहना था श्री महाराज के प्रवचन बहुत ही सरल व मार्मिक थे।

" हर व्यक्ति को क्या चाहिये, सुख चाहिये। कैसा सुख चाहिये, जो हर समय मिले, हर व्यक्ति से मिले। हर स्थान से मिले। ऐसा सुख केवल परमात्मा है। नाम सिमरन से ही सम्भव है।"

9 मई 2003

प्रातः 6 से 6.30 बजे ध्यान की सभा हुई। पूज्य श्री महाराज जी फीजी जाने के लिये दोपहर 12 बजे के लिये प्रस्थान किया। जब श्री महाराज जी Airport पर इन्तज़ार कर रहे थे, तो एक सज्जन श्री महाराज जी की आकर्षण शक्ति से प्रभावित हो कर, उन्हें निहारता ही जा रहा था। रुक रुक कर देखता रहा। काफी आगेचले जाने के बाद, वह सज्जन वापिस लौट कर आया और श्री महाराज से हाथ मिला कर और उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया। उनका नाम था श्री चन्द्र भट्ट और वह Airport पर काम करते हैं।

श्री महाराज जी रात 9 बजे सुवा Airport पर पहुंचे जहां पर उनका सुवा के लोगों ने भव्य स्वागत किया। मंगल कलश, जोत और तिलक द्वारा श्री महाराज जी का अभिनन्दन किया गया। महाराज श्री सुवा के लोगों को धन्यवाद देते हुए 47, पीलिंग रोड के लिये प्रस्थान कर गये।

10 मई 2003 सुवा

श्री लक्ष्मी मां विष्णु मन्दिर नाम्बुआ में प्रातः 9.30 – 10.45 तक अमृतवाणी संकीर्तन एवं महाराज जी के पावन प्रवचन सुवा के लोगों ने ग्रहण किये।

श्री महाराज जी लम्बासा ऐयरपोर्ट पर 4.30 बजे उतरे तो उनकी अगवानी के लिये लगभग 200 लोग एकत्रित थे। उनका फूलमाला से व आरती उतार कर स्वागत किया गया। वह उन्हें सर्व प्रथम तुवा तुवा गायत्री भवन में ले गये। वह दृष्य देखते ही बनता था। सब से आगे श्री महाराज जी की गाड़ी व उस के पीछे लगभग 15–20 गाड़ियां एक साथ गायत्री मदिर में पहुंची। वहां श्री महाराज जी को जब विराजित किया गया तो आसपास सब लोग उन्हें घेर कर बैठ गये। श्री महाराज जी ने उन्हें ओर समीप आने को कहा। अपने आप को धन्य मानते हुए कि इतने महान संत हमारे बीच पधारे हैं, श्री महाराज जी का स्वागत किया।

श्री महाराज जी ने सब को सम्बोधित करते हुए धन्यवाद सहित अपना छोटा सा परिचय दिया मानो उसी समय ही सभी उपस्थित जनों को उन्होंने अपना बना लिया। उनकी सौम्यता व सरलता उनको भा गई और दूसरे दिन उसी स्थान पर अमृतवाणी सत्संग में लगभग 900 लोग उपस्थित थे। श्री महाराज जी ने कहा, "मैं कोई संत नहीं हूं, केवल अपने गुरु जनों का नौकर हूं , केवल उनका संदेश लेकर आया हूं।"

जिनके घर पर पूज्य श्री महाराज जी ठहरे हुए थे, उनके कथनानुसार उनको पहली बार में ही लगा हम सब एक ही परिवार के लोग हैं। महाराज जी की सरलता एवं प्रेम भाव उनको ऐसा भाया कि वे मंत्र दीक्षा लेने के बाद सब सजल नयन थे। पूज्य श्री महाराज जी सबके साथ मिल कर बैठ जाते, उनसे बातें करते और उन लोगों का कहना है कि पहली बार ऐसे संत मिले हैं जो उनको अपने सम्मुख बिठा कर ज्ञान की बातें करते। और जिस दिन श्री महाराज जी ने प्रस्थान किया उनके चेहरे आसुंओं से भरे हुए थे।

दोपहर 3.30 छोटा सा जहाज़ (20 सीट) श्री महाराज जी को ले कर सुवा से लम्बासा पहुंचा।

10 मई लम्बासा

वहां पंडित जी ने कहा कि 22 साल हो गये इस मंदिर को बने हुए, परन्तु इतनी भारी संख्या में लोग कभी इकट्ठे नहीं हुए। लगभग 10–15 गांवों के लोग थे। तीन बसें तो एक गांव बुनीबाऊ से ही आई थीं।

जो लोग खाना बना रहे थे, अमृतवाणी के पाठ के समय, साथ–साथ कड़छी चलाते ओर नृत्य करते हुए अमृत–वाणी का पाठ कर रहे थे।

एक पति–पत्नी दीक्षा लेने के लिये बैठे थे। उनका बच्चा रोता रहा बाहर। श्री महाराज जी ने पूछा आप बाहर जाना चाहेंगे, तो उन्होंने कहा, कोई बात नहीं अब हम दीक्षा लेकर ही बाहर जायेंगे।

तुवा तुवा गायत्री भवन में श्री महाराज जी ने आरती का भी कार्यक्रम था। सब हाथ जोड़े नम्रता से खड़े रहे। लाम्बासा के लोगों के भाव ऐसे ऊंचे थे कि श्री महाराज जी सबके मध्य में ऐसे घूमते रहे, जैसे वो उनके ही परिवार के लोग थे। 900 लोगों में से 233 लागों ने दीक्षा ली।

लम्बासा में शाम के समय''नाग देवता'' का मन्दिर श्री महाराज जी ने देखा। जो शिला रुप में थे नाग देवता एक 12 फुट ऊंची शिला के रुप में है, पूरे नाग का आकार है और 70 साल पुराना है और धीरे धीरे ऊंचा होता जा रहा है। अतः उसे की छत कई बार तोड़ कर ऊंची करवानी पड़ती है। ये परमात्मा की लीला है। श्री महाराज जी ने नाग देवता की आरती उतारी और तीन बार परिक्रमा की। श्री महाराज जी का मुख मण्डल प्रसन्नता से दमक रहा था।

पूज्य श्री महाराज जी का लम्बासा के लोगों ने जो हार्दिक स्वागत किया है वह बहुत ही विल्क्षण है। लोग उमड़ घुमड़ कर श्री महाराज जी के दर्शनों के लिये पहुंचे और उन्हें अपना बना लिया। ऐसा लगता था जैसे सारा गांव जश्न मना रहा हो। उन्होंने अपने आपको अति सौभाग्यशाली पाया। पूज्य श्री महाराजजी से दीक्षा ग्रहण सब कृत्य कृत्य हो उठे। पूज्य गुरुदेव की नम्रता ने उनके मन को छू लिया। लोगों का कहना था, आज तक वहां जितने भी संत प्रवचन करने आते, सबकी अलग अलग मांगे

रहती। उनके कथनानुसार यह पहली बार है उनके जीवन में ऐसा संत आया जो सिर्फ देते ही जा रहे हैं। किसी से कुछ लिया नहीं जो देना ही देना जानता है। सब लोग धन्य मान रहे थे।

पूज्य महाराज जी के लिये अपनी योग्यता से ज्यादा करने की कोशिश करते रहे और श्री महाराज जी भी प्रेमपूर्वक उनके सारे कार्य स्वीकार करते रहे। श्री महाराज जी के लिये उन्होंने लकड़ी का चुल्हा जला कर प्रीति भोज बनाया और पूज्य श्री महाराज जी उनके इस सच्चे प्रेम भाव से अति प्रभावित हुए। कुछ औरते कहने लगीं, " ये तो अपना सा ही लगता है।"

सबसे ज्यादा मार्मिक दृष्य तो था कि जब श्री महाराज जी लम्बासा ऐयरपोंट के लिये रवाना हुए तो बहुत सी माताओं और बहनों ने रो रो कर विदाई दी। ऐसा लगता था अगर कुछ समय और लम्बासा रुक जाते तो वहां के लोग शायद उन्हें लौटने ही न देते। राम मंत्र पाकर वे सब अपने आपको धन्य मानते हैं और श्री महाराज जी को अपना कर बहुत मोद मनाते हैं।

12 मई 2003 प्रातः 'बा' गांव

रावावाई भवन बा के मंदिर में श्री महाराज जी के स्वागत उपरान्त अमृत वाणी संकीर्तन हुआ और 9 साल के बच्चे से ले कर बड़े बूड़ों ने मंत्र दीक्षा का स्वादुतम रस पाया है। नाम दीक्षा देते समय एक छोटी बच्ची से पूछा, " आप समझ सकोगे ?" उसने प्यार से सिर हिला दिया और कहा, "हां जी।"

फीजी में लोग बहुत ही सरल हैं। दो सौ साल पहले हिन्दुस्तान से कुछ लोग फीजी को आबाद करने के लिये लाये गये थे। इतने वर्षों के बाद भी वे अपनी हिन्दु संस्कृति को जीवित रखे हैं। फीजी में हमारे हिन्दु भाई बहुत मेहनत करते हैं और हिन्दी भाषा को बहुत मान्यता देते हैं। श्री महाराज जी के जाने पर दूर दूर गांव से लोग एकत्रित होकर प्रवचन सुनने के लिये पहुंचे। लोगों का कहना था श्री महाराज जी कुछ समय और रुक जाते क्योंकि ऐसे सच्चे संत को पाकर उनका मन नहीं भरा।

12 मई नन्दी गांव सायं 7 बजे अमृतवाणी संकीर्तन

श्री महाराज जी जब अमृतवाणी के सत्संग के लिये पधारे तो 40–50 औरतें हिन्दुस्तानी लिबास पहने 'दिये' हाथ में लेकर पूज्य गुरुदेव के स्वागत के लिये इंतज़ार कर रही थीं तो सभी उन्हें लेकर सत्संग हाल तक लेकर चलीं, सुन्दर दृष्य देखते ही बनता था, मानो श्री राम अयोध्या पधारे हों और जनता ने दीपावली मनाकर उनका स्वागत किया, वहां के व्यक्तियों के मन भी इसी प्रकार श्री महाराज जी ने अपने दर्शनों व प्रवचनों से प्रकाशित किये, श्री महाराज जी ने उस वक्त गाड़ी से उतर कर उन्हें हाथ जोड़ कर धन्यवाद दिया। श्री महाराज जी कहने लगे कि उन्होंने ऐसा विशेष स्वागत कहीं नहीं पाया और उन सब लोगों का धन्यवाद देने के लिये शब्द भी नहीं थे उनके पास।

उन गोपियों ने श्री महाराज जी को घेर लिया और जलते दियों के साथ रास्ता दिखाती हुई उन्हें ऊपर ले गई जिसके पश्चात उन्होंने आरती और तिलक के साथ गुरुदेव का अभिनन्दन किया। जब मंच पर चढ़े तो दो छोटी लड़कियों ने श्री महाराज जी के तिलक किया और माला पहनाई । श्री महाराज जी ने उनके चरण छुए।

यहां पर अधिकतर अध्यापक, अध्यापिकायें, हेड मास्टर आदि शिक्षित लोग थे। कुछ स्कूल के बच्चे लड़के व लड़कियां भी दीक्षा ग्रहण करने वालों में सम्मिलित थे।

एक महिला कहने लगी, वे रोज श्री हनुमान जी से प्रार्थना करती कि उसे एक सच्चे गुरु मिलें। वे उस स्कूल के हेडमास्टर की पत्नी है। श्री महाराज जी से मिल कर उन्हें ऐसा लगा मानो उनकी प्रार्थना हनुमान जी महाराज ने स्वीकार कर ली। उन्होंने अपने पति के साथ मिल कर गुरु मंत्र का मधुर रस पान किया।

फीजी के लोगों का कहना है कि ऐसे महान संत जी की शरण पाकर उनका जीवन धन्य हुआ है। लेकिन मन नहीं भरा।

साधकों की अभिव्यक्तियां

'नवल उमराव' लोटोंका निवासी फीजी अपने परिवार सहित कोई 30 कि.मी. दूर 'बा' में आयोजित सत्संग में शामिल होने पहुंचे। अमृतवाणी व प्रवचन के पश्चात वे कहने लगे, मेरी बेटियां नवली शा और नोलीशा। नाम दीक्षा लेंगी। परन्तु मुझे तो दीक्षा लेने का अभी विचार नहीं है। परन्तु कुछ समय बाद उन्होंने अपनी बेटियों के साथ ही नाम दीक्षा ली। पूज्य महाराज जी की उन पर ऐसी कृपा हुई कि उन्होंने अपने मन के उद्‌गार इस प्रकार व्यक्त किये, " श्री महाराज जी हमें बहुत अच्छे लगे, हमारा मन उन के प्रवचनों को सुन कर नहीं भरा और भी उन्हें देखने व सुनने को मन करता है।" इस परिवार की एक छोटी बेटी जो 7 वर्ष की है हर सुबह शाम मम्मी पापा को याद दिलाती है कि संध्या के समय ध्यान में बैठना है। उन का कहना है कि श्री महाराज जी के आशीर्वाद से तो हमारा भाग्य उदय हो गया है।

" विष्णु देव जी ने श्री महाराज जी के सम्बन्ध में कहा "श्री महाराज जी एक सच्चे संत हैं इन्होंने फीजी निवासियों के हृदय में राम नाम स्थापित कर दिया है। प्रत्येक व्यक्ति का यह कहना है कि लाम्बासा की भूमि पूज्य श्री के पदार्पण से पावन हो गई है। कुछ व्यक्तियों ने पहले किसी से 'ज्ञान दीक्षा' ली हुई थी उन्होंने भी श्री महाराज जी से इस साधना की पद्धति से प्रभावित हो कर 'नाम दीक्षा' ली जो कि उन्हें सरल व सहज लगी। श्री विष्णु देव जी यहां पर गायत्री भवन तुवा तुवा में साप्ताहिक अमृतवाणी सत्संग की शुरुआत करेंगे।

श्री महाराज जी के फीजी लौटने के पश्चात वहां के व्यक्तियों के अनुभव

मास्टर जयकरण नामक एक व्यक्ति ने श्री महाराज जी से तुवा तुवा में नाम दीक्षा ली। कुछ व्यक्ति जिन्होंने नाम दीक्षा नहीं ली, उन्होंने श्री जयकरण जी को जा कर कहा हम अब महसूस कर रहे हैं कि नाम दीक्षा न ले कर उन्होंने कुछ खो दिया हो। उन्हें इस बात पर पश्चाताप हो रहा है कि उन्होंने एक सुनहरा अवसर गंवा दिया जिसे परमात्मा ने उन्हें प्रदान किया था।

जिन व्यक्तियों को सत्संग का निमंत्रण मिला था और नहीं पहुंच पाये, वे भी पश्चाताप कर रहे थे। संतो के दर्शनों का अवसर सौभाग्य से प्राप्त होता है। ऐसा विचार कर वे लोग अपने को धन्य मान रहे हैं जिन्होंने श्री महाराज जी के दर्शनों का लाभ प्राप्त किया है।

मास्टर जय करण अगले सप्ताह से लम्बासा कोलेज के विद्यार्थियों के होस्टल में अमृतवाणी सत्संग का शुभारम्भ करेंगे। उन का कहना है कि विद्यार्थी रामायण पाठ तो करते ही हैं, परन्तु अमृतवाणी तो श्री रामायण जी का सार है, जो हमें सुलभता से प्राप्त हुई है। मास्टर जयकरण के दो पुत्रों व एक पुत्र वधु ने सिडिनी 13 मई को श्री महाराज जी से दीक्षा ग्रहण की।

'सतगुरु की कृपा''

12 मई 2003 की सुबह जब 'बा' में सत्संग का कार्यक्रम था तो रास्ते में श्री महाराज जी में सुब्रामणियम मन्दिर (नान्दी में) के दर्शन किये व यह कथा बताई कि कार्तियेक जी को उन की माता ने (पार्वती जी) ने कह दिया कि मैं सब में विराजती हूं इस लिये उन्होंने जीवन भर विवाह नहीं किया। कार्तिकेय जी गणपति जी के बड़े भाई हैं।

फीजी नान्दी Airport 13 मई 2003 पर ही एक साधक श्री मुराली लाल जी व उन की पत्नी को श्री महाराज जी ने श्री अधिष्ठान जी दिया। वे पति पत्नी अपने गांव लम्बासा जा रहे थे और श्री महाराज जी से दीक्षा ग्रहण कर चुके थे। श्री महाराज जी कुछ साधकों के साथ फीजी की यात्रा समाप्त करके सिडनी वापिस आ रहे थे। गुरु की कृपा व दयालुता देखते ही बनती थी कि जिस को वो देना चाहे, कहीं भी किसी भी स्थान पर प्रदान कर सकते हैं।

12 मई 2003 स्थान रारावाई 3 नम्बर भवन 'बा'

बा फीजी में सत्संग आरम्भ होने से पहले एक महिला जो उसी गांव की थी, आकर पूछ ताछ करने लगी की मेरे पति दीक्षा नहीं लेंगे, क्या केवल मैं दीक्षा ले सकती हूं। पति के लिये मांस पकाना पड़ता हे। लेकिन

मैं नहीं खाती हूं क्योंकि पति ही परमेश्वर है। मैं यही मान उन की सेवा करती हूं। व्रत पूजा श्री गीता जी का पाठ उस की दिनचर्या है। 18 अध्याय श्री कृष्ण जी के चरण हैं। इस प्रकार के संशयों व बातों से भरे मन से नयनों में अश्रु लिये कहती मेरे गांव में महान संत पधार रहे हैं, "अभी उस ने श्री महाराज जी के दर्शन नहीं किये थे।" उन्हें बताया गया हमारे सत्संग में दीक्षा ग्रहण करने के लिये कोई शर्त नहीं है और न ही कोई दक्षिणा में रुपये पैसे आदि लिये जाते हैं। वह महिला प्रसन्न हो गई और श्री महाराज जी ने अपने प्रवचनों में ही उन के सारे संशय दूर कर दिये। उन्होंने नाम दीक्षा ग्रहण करके अपने आपको धन्य मानती हुई प्रेम भरे आंसू लिये विदा हुई।

वुनिवाऊ लम्बासा से 70 वर्षीय बलराजी

दीक्षा उन्होंने सिडनी में ग्रहण की, उन का कहना है, सारी उम्र में उन्होंने ने ऐसा संत नहीं देखा। – जीवन का सच्चा सुख इन्होंने पा लिया। कहती हैं –" मुझे रात में नींद नहीं आती, बस दुबारा साधू का मुस्कराता हुआ चेहरे के दर्शन करने की अभिलाषा है"।

वुनिवाऊ लम्बासा से माया प्रताप

माया जी ने तुआ तुआ में नाम दीक्षा ली। लम्बासा में सत्संग आयोजित करने एवं लोगों को इक्ट्ठा करने में इन का बड़ा सहयोग था। जिन लोगों से ये बाद में सम्पर्क में आई उन्हें पूज्य श्री महाराज जी "बहुत अच्छे " लगे। पूज्य श्री की साधारण भाव, सरलता एवं प्रेम से सभी प्रभावित हुए। माया जी वुनिवाऊ में अगले हफते से सत्संग की शुरुआत करेंगी।

श्री मान श्रीमति चन्द्रिका प्रसाद सूवा

9 मई को पूज्य श्री इन के घर ठहरे, रात्री का भोजन, सुबह का नाश्ता एवं दोपहर का भोजन सभी ने उन के घर किया। इन्हें लगा कि वे सही ढंग से गुरु देव का स्वागत नहीं कर सके। पूज्य श्री का प्रेम और अपनापन इन के मन को भा गया। पहले से दीक्षित होते हुए भी पूज्य श्री

से नाम दीक्षा ग्रहण की। पूज्य श्री के जाने के बाद इन्हें लगा कि इन का आंगन सूना हो गया, घर सूना हो गया, मनों में उदासी छा गई, बस रोने की चाह हो रही है।

सूरज देव लम्बासा

सूरज देव जी की पत्नी, सासू मां, साली व दो बेटों (12 वर्ष और 9 वर्ष) ने दीक्षा ली। इन का कहना है कि इन के घर में सभी खुश हैं, बच्चे सुबह शाम ध्यान में बैठते हैं। सात वर्ष का नमन भी जाप करता है। सभी का श्री महाराज जी बहुत ही अच्छे लगे। सूरज देव को पता नही चलता वे क्यूं दीक्षा लेने से रह गये, अब अगली बार का इन्तज़ार है।

श्री मान जगदीश सिडनी निवासी

श्री जगदीश और उन की पत्नी सुनीता ने 13 मई का सिडनी में और उन के माता पिता ने 11 मई को तुआ तुआ में दीक्षा ली। 4 अप्रेल को इन्होंने ने पहली बार श्री अमृतवाणी का पाठ सुना था, जो इन के मन को भा गया। तभी से श्री राम शरणम् एवं राम नाम की अराधना के विषय में website से पढ़ना शुरु कर दिया। श्री महाराज जी के दर्शन एवं प्रवचन से अत्यन्त प्रसन्न होने पर भी अपने माता पिता की आज्ञा का इन्तज़ार किया और उन को नाम प्राप्त होने के पश्चात 13 मई को नाम दीक्षा ली। 17 मई को इन दोनों ने बहुत ही प्रेम और लगन के साथ (बिमला जी) घर आ कर सत्संग हाल की सफाई व सजावट की। इन का सेवा भाव सराहनिये है।

ज्योति जय राम सूवा

सूवा में दीक्षा ग्रहण कर लम्बासा और बा के सत्संग में शामिल हुई। इन्होंने न कहा " मेरे पास शब्द नहीं जिन द्वारा मैं पूज्य श्री से प्राप्त ज्ञान और साधना को बखान कर सकूं। पूज्य श्री का मुस्कुराता चेहरा आज भी इन की आंखों के सामने दीख रहा है। हृदय एक अजीब उमंग से भरपूर है।

सरोजनी सिंह नान्दी

ये नान्दी महिला मण्डल की प्रधान हैं। इन्होंने श्री महाराज जी के स्वागत की तैयारी में भाग लिया। इन का कहना है कि श्री महाराज जी के विषय में कुछ कहना नहीं आता क्योंकि हम ने कभी सोचा भी नहीं था कि ऐसे संत भी हैं –सभी से अलग – हम ऐसा गुरु पा कर धन्य हुए।

भविष्य के लिये इन्होंने ने कहा है कि वे पैसे इकट्ठे करेंगी और सभी साधना सत्संग में शामिल होने भारत आयेंगी। सरोजनी जी द्वारा नान्दी में सत्संग अगले हफते शुरु हो जायेगा।